विश्व सिंधी सेवा संगम, गुरुग्राम के 5वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष महोदय का संबोधन।

———

विश्व सिंधी सेवा संगम के 5वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत और विदेशों से आए सभी प्रतिनिधियों का मैं स्वागत और अभिनन्दन करता हूं। इस कार्यक्रम के माध्यम से देश और विश्व के सभी सिंधी समाज के लोगों को जोड़ने का काम किया गया है।

भगवान झूलेलाल की कृपा से आज सिंधी समाज भारत में भी और दुनिया के अलग-अलग देशों के अंदर व्यापार, उद्योग, सर्विस सेक्टर्स, सामाजिक क्षेत्रों में तथा राजनीतिक क्षेत्रों में भी नेतृत्व कर रहा है।

एक लंबे समय तक सिंधी समाज और जहां-जहां भी सिंधी समाज के लोग रहते हैं, उन पर अनेक आक्रमण हुए, लेकिन सिंधी समाज की संस्कृति, संस्कार, अध्यात्म और धर्म को कभी कोई नष्ट नहीं कर पाया। विश्व के अंदर भी अलग-अलग देशों के भीतर अपने पुरुषार्थ, अपने कार्य, अपनी संस्कृति और संस्कारों से उन्होंने उस देश में भी कठिन परिस्थितियों एवं चुनौतियों में काम किया और अपना स्थान बनाया। इसी कारण आज भी सिंधी समाज की संस्कृति, संस्कार, धर्म, और अध्यात्म अपनी विशेष पहचान बनाते हैं।

हम अगर विरासत और इतिहास की बात करें तो समस्त उत्तर-पश्चिम क्षेत्र, सीमांत क्षेत्र के अंदर हमारी आजादी के पहले जब भारत का विभाजन हुआ, उस समय भी सिंधी समाज पर आक्रमण हुआ, लेकिन अपने पुरुषार्थ और कड़ी मेहनत के कारण लाखों परिवार उस विभाजन की त्रासदी के अंदर भारत भी आए और भारत के अलावा अन्य देशों में भी गए, जहां वे सब कुछ छोड़कर आने के बाद भी उन्होंने अपने पुरुषार्थ से अपना अलग स्थान बनाया, इसीलिए सिंधी समाज को हमेशा पुरुषार्थ वाला समाज कहा जाता है।

मैं जिस लोक सभा और विधान सभा क्षेत्र से आता हूं, वहां पर मेरा सिंधी समाज से काफी निकट का संबंध है।

मैं सोचता था कि मेरे देश के अंदर और राजस्थान में ही सिंधी समाज के लोग पुरुषार्थ वाले हैं और भारत में पुरुषार्थ करते हैं। सिंधी समाज का व्यक्ति इस देश के अंदर कहीं भी रहा हो, मैंने हर परिवार के व्यक्ति को अपने व्यापार, उद्योग, सर्विस आदि में सारे प्रदेश और देश के अंदर प्रेरणा देने का काम किया है। छोटे-छोटे काम, जिनकी आज हम चर्चा करते हैं, जिस सेल्फ हेल्प ग्रुप की हम चर्चा करते हैं, वैल्यू एडीशन की हम चर्चा करते हैं, दुनिया में माल भेजने की बात करते हैं, वह काम सिंधी समाज वर्षों से कर रहा था। कोटा के अंदर घर में चाहे थैली बनाने का काम हो, चाहे मूंगड़ी बनाने का काम हो, चाहे पापड़ बनाने का काम हो, वहां की महिलाएं और बच्चे काम करते हैं।

दुर्गम इलाकों के अंदर, जहां उपभोक्ताओं को कई किलोमीटर दूर अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु साइकिल और बसों से आना पड़ता था, वहां पर अपने पुरुषार्थ से उन्होंने उपभोक्ताओं को सस्ती दर पर माल उपलब्ध कराने का बड़ा प्रयास किया। मुझे जब विश्व के कई देशों में जाना हुआ, तो मुझे लगा कि केवल भारत में ही नहीं, मेरे क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि विश्व के उन देशों के अंदर भी उनका पुरुषार्थ है।

मैं सोचता था कि दुबई में ही सिंधी समाज के लोगों ने पुरुषार्थ किया है। दुबई के शासकों ने सबसे पहले सिंधी समाज के व्यक्तियों को सिटिजनशिप दी। जब मुझसे उनकी चर्चा हुई, तो उन्होंने अपने जीवन के किस्से बताए कि किस तरह से जब वे वहां नौकरी करने आए थे, तो छोटी दुकान पर काम करते थे, तब पीने का पानी नहीं होता था, पानी में कीड़े निकलते थे। उन्होंने बहुत कड़ी मेहनत की, जिसके बाद उन्होंने वहां अपना स्थान बनाया।

मैंने विशेष बात सूरीनाम में यह देखी कि जहां मैं रुका हुआ था, वहां पर एक बड़ा कृपलानी मॉल था। मुझसे रहा नहीं गया, तो मैंने मेरे एम्बेसेडर से पूछा कि क्या यहां पर भी सिंधी समाज के लोग रहते हैं? तो उन्होंने कहा कि सूरीनाम में यहां का सबसे बड़ा व्यक्ति ही कृपलानी है। मैंने उनसे कहा कि उन्हें बुलाइए। उन्होंने कहा कि वह शाम को डिनर पर आ रहे हैं।

मैंने छोटे-छोटे देशों के अंदर सिन्धी लोगों से पूछा कि क्या कभी आपका हिन्दुस्तान आना-जाना रहता है, तो उन्होंने कहा कि हम हिन्दुस्तान से जुड़े रहते हैं और हम घर में अभी भी सिन्धी भाषा बोलते हैं। अभी कुछ परिवारों में सिन्धी भाषा लुप्त होती जा रही है, लेकिन आज भी अधिकतम परिवारों ने अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, अपना धर्म बचाकर रखा है। एक ऐसा समाज जो शांतिप्रिय है, जिन्होंने जीवन में कभी किसी से युद्ध नहीं किया, लेकिन पूरा जीवन संघर्ष किया, चुनौतियों से लड़े और अपना स्थान बनाया।

आप कहीं भी, दुनिया के किसी भी हिस्से में चले जाओ, आपको अलग-अलग जाति, अलग-अलग धर्म के लोग मिल जाएंगे। कोई आर्थिक स्थिति में बहुत कमजोर होगा, कोई दो टाइम की रोटी माँगकर खा रहा होगा, लेकिन सिन्धी समाज का व्यक्ति आपको कभी इस तरह से नहीं मिलेगा। वह हमेशा पुरुषार्थ करता मिलेगा, काम करता मिलेगा और कड़ी मेहनत करता हुआ मिलेगा। उनके ऐसे संस्कार हैं, एक ऐसी सामर्थ्य शक्ति है, वरूण देवता भगवान झूलेलाल ने ऐसी कृपा दी है कि सिन्धी समाज का व्यक्ति जहाँ भी जिस काम को करता है, कम मार्जिन में, कम से कम मार्जिन में काम करके एक नई व्यापारिक प्रतिस्पर्धा की दिशा देने का काम किया है तो वह सिन्धी समाज ने किया है।

इंडस्ट्रीज सेक्टर के अंदर इंडस्ट्रीज में कम लागत, ज्यादा उत्पादन की दिशा देने का काम किया है तो वह सिन्धी समाज ने किया है। सेवा के अंदर, इस भारत में, मैं अपने यहाँ के लिए कह सकता हूँ, अन्न भंडारा कर भूखे को भोजन देने की शुरुआत सिन्धी समाज ने

की। प्याऊ लगाने का काम किया तो सिन्धी समाज ने किया। विद्यालय खोलने का काम सिन्धी समाज ने किया। सिन्धी समाज ने धर्मशालाएं बनाई, अस्पताल बनाए।

इन्होंने पुरुषार्थ से जो भी धन कमाया, उस पुरुषार्थ से कमाए धन को समाज को समर्पित कर दिया। यह एक ऐसा समाज है, जो अत्यधिक धार्मिक है और इस समाज ने अपने जीवन के अंदर अपने पुरुषार्थ से कमाए हुए पैसे का समाज के लिए समर्पण किया, समाज की सेवा के लिए उसका उपयोग किया। सेवा, समर्पण और अध्यात्म इस समाज के संस्कार और संस्कृति में हैं और इसीलिए इस समाज को पुरुषार्थ समाज कहा जाता है।

सिंधी समाज के कई उदाहरण हैं जिन्होंने हमेशा धर्म, संस्कृति के लिए संघर्ष किया। मैं दुनिया के अंदर कितने ही लोगों के उदाहरण दे सकता हूँ। सूरत चले जाएं, कोटा से चला व्यक्ति सूरत में काम करने लगा, बॉम्बे में काम करने लगा, दुबई में काम करने लगा और उसने किन कठिन परिस्थितियों में काम किया, उससे इस समाज को तो प्रेरणा मिलती ही है, अन्य समाजों को भी प्रेरणा मिलती है।

अपने पुरुषार्थ से, अपनी कड़ी मेहनत से, अपनी क्षमता से, नये इनोवेशन से, नए रिसर्च से उद्योग और व्यापार के नए सेक्टर के अंदर किस तरीके से प्रतिस्पर्धा में काम करें। मुझे याद है कि मैं बहुत छोटा था तब मैं किराने की दुकान पर बैठता था। उस समय प्रतिस्पर्धा के अंदर अगर कोई काम करता था तो सिंधी समाज का व्यक्ति काम करता था। एक बोरी के अंदर, केवल शक्कर की एक बोरी की बचत में वह कम्पीटिशन में काम लेता था।

अगर व्यापार के अंदर प्रतिस्पर्धा किसी ने सिखाई है तो सिंधी समाज के लोगों ने सिखाई है। प्रतिस्पर्धा से उपभोक्ता को लाभ हुआ, उसको सस्ती दर पर माल मिलने लगा। लेकिन ज्यादा माल बेचना, कम लाभ कमाना, मैं सिंधी समाज के जीवन के कितने ही उदाहरण दे सकता हूं, क्योंकि मैं सिंधी समाज के लोगों के बीच में पला, पढ़ा और बड़ा

हुआ हूं। मैंने उनके कार्यों को देखा है, उनके संघर्षों को देखा है, उनके अनुभवों को देखा है, इसलिए मैं कह सकता हूं कि सिंधी समाज एक पुरुषार्थ समाज है, अत्यधिक धार्मिक समाज है।

जब भी देश में कोई आपदा या संकट आता है तो सामाजिक सेवा के लिए सबसे पहले सिंधी समाज का व्यक्ति रहता है। मैं विश्व सिंधी सेवा संगम में देश भर के और विश्व भर के आए सभी प्रतिनिधियों का भारत में स्वागत करता हूं।

मैं कहूंगा कि अभी पता नहीं है कि दुनिया के अंदर कहां-कहां सिंधी समाज के लोग रहते हैं। एक बार और प्रयास करना चाहिए ताकि सभी को एक प्लेटफार्म पर लाया जाए। हम जितना यहां एक प्लेटफार्म पर लाएंगे, उतना ही भारत के आर्थिक तंत्र को और सशक्त, मजबूत करेंगे, क्योंकि दुनिया के अंदर अलग-अलग सेक्टर में काम करने वाले लोग भारत में आएँगे।

आज भारत दुनिया का सबसे बेस्ट आर्थिक डेस्टिनेशन हो चुका है। माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की एक प्रतिष्ठा बनी है और दुनिया भारत की ओर देख रही है। इसलिए मुझे लगता है कि यह समय भारत के उदय का सबसे महत्वपूर्ण क्षण है।

हमें एक कुशल नेतृत्व मिला है, एक सक्षम नेतृत्व मिला है, नई सोच का नेतृत्व मिला है और दुनिया के अंदर वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति को लेकर चलने वाला नेतृत्व मिला है। हमें इस मौके पर देश भर के सिंधी समाज को यहां पर लाकर व्यापार, उद्योग और अन्य अपॉर्च्युनिटी का मौका देना चाहिए। कभी भी मेरे लायक किसी भी तरह का कोई काम हो तो मैं आपकी सेवा के लिए हमेशा तैयार हूं।

———